السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَیْنَهُمَا ۚ وَعِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَاِلَیْهِ
आस्मानों और ज़मीन की और जो कुछ इन के दरमियान है और उसी के पास है क़ियामत का इ़ल्म और तुम्हें

تُرْجَعُوْنَ ﴿۸۵﴾ وَلَا یَمْلِكُ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الشَّفَاعَةَ اِلَّا
उसी की त़रफ़ फिरना और जिन को येह **अल्लाह** के सिवा पूजते हैं शफ़ाअ़त का इख़्तियार नहीं रखते हां शफ़ाअ़त का इख़्तियार उन्हें है

مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ یَعْلَمُوْنَ ﴿۸۶﴾ وَلَىِٕنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَهُمْ لَیَقُوْلُنَّ
जो ह़क़ की गवाही दें[135] और इ़ल्म रखें[136] और अगर तुम उन से पूछो[137] कि उन्हें किस ने पैदा किया तो ज़रूर कहेंगे

وقف لازم
اللّٰهُ فَاَنّٰى یُؤْفَكُوْنَ ﴿۸۷﴾ ۙ وَقِیْلِهٖ یٰرَبِّ اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ قَوْمٌ لَّا یُؤْمِنُوْنَ ﴿۸۸﴾ ۘ
अल्लाह ने[138] तो कहां औंधे जाते हैं[139] मुझे रसूल[140] के इस कहने की क़सम[141] कि ऐ मेरे रब येह लोग ईमान नहीं लाते

ركوع ٧ / ٢١ / ١٣
فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلٰمٌ ؕ فَسَوْفَ یَعْلَمُوْنَ ﴿۸۹﴾ ع
तो उन से दर गुज़र करो[142] और फ़रमाओ बस सलाम है[143] कि आगे जान जाएंगे[144]

ایاتها ٥٩ | ٤٤ سورة الدخان مكية ٦٤ | ركوعاتها ٣

सूरए दुख़ान मक्किय्या है, इस में उन्सठ आयतें और तीन रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

مع ١٢
حٰمٓ ﴿۱﴾ ۛ وَالْكِتٰبِ الْمُبِیْنِ ﴿۲﴾ ۙ اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ فِیْ لَیْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا
क़सम उस रोशन किताब की[2] बेशक हम ने उसे बरकत वाली रात में उतारा[3] बेशक हम

مُنْذِرِیْنَ ﴿۳﴾ فِیْهَا یُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِیْمٍ ﴿۴﴾ ۙ اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ؕ اِنَّا
डर सुनाने वाले हैं[4] उस में बांट दिया जाता है हर ह़िक्मत वाला काम[5] हमारे पास के हुक्म से बेशक

135 : या'नी तौह़ीदे इलाही की। **136 :** इस का कि **अल्लाह** उन का रब है, ऐसे मक़्बूल बन्दे ईमानदारों की शफ़ाअ़त करेंगे। **137 :** या'नी मुश्रिकीन से। **138 :** और **अल्लाह** तआ़ला के ख़ालिक़े आ़लम होने का इक़रार करेंगे। **139 :** और बा वुजूद इस इक़रार के उस की तौह़ीद व इबादत से फिरते हैं। **140 :** सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **141 : अल्लाह** तबारक व तआ़ला का हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के क़ौले मुबारक की क़सम फ़रमाना हुज़ूर के इकराम और हुज़ूर की दुआ़ व इल्तिजा के एह़तिराम का इज़्हार है। **142 :** और उन्हें छोड़ दो **143 :** येह सलामे मुतारकत है, इस के मा'ना येह हैं कि हम तुम्हें छोड़ते हैं और तुम से अम्न में रहना चाहते हैं (وَكَانَ هٰذَا قَبْلَ الْاَمْرِ بِالْجِهَادِ) **144 :** अपना अन्जामे कार। **1 :** सूरए दुख़ान मक्किय्या है इस में तीन रुकूअ़ और सत्तावन या उन्सठ आयतें और तीन सो छियालीस कलिमे और एक हज़ार चार सो इक्तीस ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी क़ुरआने पाक की जो ह़लाल व ह़राम वग़ैरा अह़काम का बयान फ़रमाने वाला है। **3 :** इस रात से या शबे क़द्र मुराद है या शबे बराअत, इस शब में क़ुरआने पाक बि तमामिही लौह़े मह़फ़ूज़ से आस्माने दुन्या की त़रफ़ उतारा गया फिर वहां से ह़ज़रते जिब्रील तेईस साल के अ़र्से में थोड़ा थोड़ा ले कर नाज़िल हुए, इस शब को शबे मुबारका

www.dawateislami.net

كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ۝٥ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٦

हम भेजने वाले हैं[6] तुम्हारे रब की तरफ़ से रह़मत बेशक वोही सुनता जानता है

رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ۝٧ لَآ اِلٰهَ وقف لازم

वोह जो रब है आस्मानों और ज़मीन का और जो कुछ इन के दरमियान है अगर तुम्हें यक़ीन हो[7] उस के सिवा

اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۭ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآىِٕكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۝٨ بَلْ هُمْ

किसी की बन्दगी नहीं वोह जिलाए और मारे तुम्हारा रब और तुम्हारे अगले बाप दादा का रब बल्कि वोह

فِيْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ ۝٩ فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَاْتِي السَّمَآءُ بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ ۝١٠

शक में पड़े खेल रहे हैं[8] तो तुम उस दिन के मुन्तज़िर रहो जब आस्मान एक ज़ाहिर धूआं लाएगा

يَّغْشَى النَّاسَ ۭ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝١١ رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا

कि लोगों को ढांप लेगा[9] येह है दर्दनाक अ़ज़ाब उस दिन कहेंगे ऐ हमारे रब हम पर से अ़ज़ाब खोल दे हम

مُؤْمِنُوْنَ ۝١٢ اَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ۝١٣ ثُمَّ

ईमान लाते हैं[10] कहां से हो उन्हें नसीह़त मानना[11] ह़ालां कि उन के पास साफ़ बयान फ़रमाने वाला रसूल तशरीफ़ ला चुका[12] फिर

تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوْا مُعَلَّمٌ مَّجْنُوْنٌ ۝١٤ اِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيْلًا اِنَّكُمْ وقف لازم

उस से रूगर्दां हुए और बोले सिखाया हुवा दीवाना है[13] हम कुछ दिनों को अ़ज़ाब खोले देते हैं तुम फिर

इस लिये फ़रमाया गया कि इस में क़ुरआने पाक नाज़िल हुवा और हमेशा इस शब में ख़ैरो बरकत नाज़िल होती है, दुआ़एं क़बूल की जाती हैं। **4 :** अपने अ़ज़ाब का। **5 :** साल भर के अरज़ाक़ व आजाल (अम्वात) व अह़काम। **6 :** अपने रसूल ख़ातमुल अम्बिया मुह़म्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और इन से पहले अम्बिया को। **7 :** कि वोह आस्मान व ज़मीन का रब है तो यक़ीन करो कि मुह़म्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उस के रसूल हैं। **8 :** उन का इक़रार इल्मो यक़ीन से नहीं बल्कि उन की बात में हंसी और तमस्ख़ुर शामिल है और वोह आप के साथ इस्तिहज़ा करते हैं तो रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन पर दुआ़ की, कि या रब ! इन्हें ऐसी हफ़्त सालह क़ह़त़ की मुसीबत में मुब्तला कर जैसे सात साल का क़ह़त़ ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने में भेजा था। येह दुआ़ मुस्तजाब हुई और हु़ज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से इर्शाद फ़रमाया गया **9 :** चुनान्चे क़ुरैश पर क़ह़त़ साली आई और यहां तक इस की शिद्दत हुई कि वोह लोग मुर्दार खा गए और भूक से इस ह़ाल को पहुंच गए कि जब ऊपर को नज़र उठाते आस्मान की त़रफ़ देखते तो उन को धूआं ही धूआं मा'लूम होता या'नी ज़ो'फ़ से निगाहों में ख़ीरगी (धुंदलाहट) आ गई थी और क़ह़त़ से ज़मीन ख़ुश्क हो गई ख़ाक उड़ने लगी ग़ुबार ने हवा को मुकद्दर (मैला) कर दिया। इस आयत की तफ़्सीर में एक क़ौल येह भी है कि धूएं से मुराद वोह धूआं है जो अ़लामाते क़ियामत में से है और क़रीबे क़ियामत ज़ाहिर होगा, मशरिक़ो मग़रिब उस से भर जाएंगे, चालीस रोज़ो शब रहेगा, मोमिन की ह़ालत तो उस से ऐसी हो जाएगी जैसे ज़ुकाम हो जाए और काफ़िर मदहोश होंगे। उन के नथनों और कानों और बदन के सूराख़ों से धूआं निकलेगा। **10 :** और तेरे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्दीक़ करते हैं। **11 :** या'नी इस ह़ालत में वोह कैसे नसीह़त मानेंगे **12 :** और मो'जिज़ाते ज़ाहिरात और आयाते बय्यिनात पेश फ़रमा चुका। **13 :** जिस को वह़्य की ग़शी त़ारी होने के वक़्त जिन्नात येह कलिमात तल्क़ीन कर जाते हैं। (مَعَاذَ اللّٰه تَعَالٰى)

www.dawateislami.net

وقف لازم عَآئِدُوْنَ ﴿١٥﴾ يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرٰى ۚ اِنَّا مُنْتَقِمُوْنَ ﴿١٦﴾ وَلَقَدْ

वोही करोगे[14] जिस दिन हम सब से बड़ी पकड़ पकड़ेंगे[15] बेशक हम बदला लेने वाले हैं और बेशक

فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَآءَهُمْ رَسُوْلٌ كَرِيْمٌ ﴿١٧﴾ اَنْ اَدُّوْٓا اِلَيَّ

हम ने इन से पहले फ़िरऔन की क़ौम को जांचा और उन के पास एक मुअ़ज़्ज़ रसूल तशरीफ़ लाया[16] कि **अल्लाह** के बन्दों को

عِبَادَ اللّٰهِ ؕ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٨﴾ وَّاَنْ لَّا تَعْلُوْا عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنِّيْٓ

मुझे सिपुर्द कर दो[17] बेशक मैं तुम्हारे लिये अमानत वाला रसूल हूं और **अल्लाह** के मुक़ाबिल सरकशी न करो मैं

اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٩﴾ وَاِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ اَنْ تَرْجُمُوْنِ ﴿٢٠﴾

तुम्हारे पास एक रोशन सनद लाता हूं[18] और मैं पनाह लेता हूं अपने रब और तुम्हारे रब की इस से कि तुम मुझे संगसार करो[19]

وَاِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِيْ فَاعْتَزِلُوْنِ ﴿٢١﴾ فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ

और अगर तुम मेरा यक़ीन न लाओ तो मुझ से कनारे हो जाओ[20] तो उस ने अपने रब से दुआ़ की कि येह

الثلثة مُّجْرِمُوْنَ ﴿٢٢﴾ فَاَسْرِ بِعِبَادِيْ لَيْلًا اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَاتْرُكِ الْبَحْرَ

मुजरिम लोग हैं हम ने हुक्म फ़रमाया कि मेरे बन्दों[21] को रातों रात ले निकल ज़रूर तुम्हारा पीछा किया जाएगा[22] और दरिया को यूंही जगह जगह से

رَهْوًا ؕ اِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٢٤﴾ كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٢٥﴾ وَّ

खुला छोड़ दे[23] बेशक वोह लश्कर डुबोया जाएगा[24] कितने छोड़ गए बाग़ और चश्मे और

زُرُوْعٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿٢٦﴾ وَّنَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ﴿٢٧﴾ كَذٰلِكَ ۫ وَ

खेत और उ़म्दा मकानात[25] और ने'मतें जिन में फ़ारिग़ुल बाल थे[26] हम ने यूंही किया और

14 : जिस कुफ़्र में थे उसी की त़रफ़ लौटोगे, चुनान्चे ऐसा ही हुवा, अब फ़रमाया जाता है कि उस दिन को याद करो **15 :** उस दिन से मुराद रोज़े क़ियामत है या रोज़े बद्र। **16 :** या'नी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام। **17 :** या'नी बनी इसराईल को मेरे ह़वाले कर दो और जो शिद्दतें और सख़्तियां उन पर करते हो उस से रिहाई दो। **18 :** अपने सिद्क़े नुबुव्वत व रिसालत की, जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने येह फ़रमाया तो फ़िरऔ़नियों ने आप को क़त्ल की धम्की दी और कहा कि हम तुम्हें संगसार कर देंगे तो आप ने फ़रमाया **19 :** या'नी मेरा तवक्कुल व ए'तिमाद उस पर है, मुझे तुम्हारी धम्की की कुछ परवा नहीं **अल्लाह** तआ़ला मेरा बचाने वाला है। **20 :** मेरी ईज़ा के दरपै न हो, उन्हों ने इस को भी न माना। **21 :** या'नी बनी इसराईल **22 :** या'नी फ़िरऔ़न मअ़ अपने लश्करों के तुम्हारे दरपै होगा। चुनान्चे ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام रवाना हुए और दरिया पर पहुंच कर आप ने अ़सा मारा, उस में बारह रस्ते ख़ुश्क पैदा हो गए, आप मअ़ बनी इसराईल के दरिया में से गुज़र गए, पीछे फ़िरऔ़न और उस का लश्कर आ रहा था आप ने चाहा कि फिर अ़सा मार कर दरिया को मिला दें ताकि फ़िरऔ़न उस में से गुज़र न सके तो आप को हुक्म हुवा **23 :** ताकि फ़िरऔ़नी उन रास्तों से दरिया में दाख़िल हो जाएं। **24 :** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को इत़्मीनान हो गया और फ़िरऔ़न और उस के लश्कर दरिया में ग़र्क़ हो गए और उन का तमाम मालो मताअ़ और सामान यहीं रह गया। **25 :** आरास्ता पैरास्ता मुज़य्यन। **26 :** ऐश करते इतराते।

www.dawateislami.net

أَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِیْنَ ﴿۲۸﴾ فَمَا بَكَتْ عَلَیْهِمُ السَّمَآءُ وَ الْاَرْضُ وَ مَا

उन का वारिस दूसरी क़ौम को कर दिया[27] तो उन पर आस्मान और ज़मीन न रोए[28] और उन्हें

كَانُوْا مُنْظَرِیْنَ ﴿۲۹﴾ وَ لَقَدْ نَجَّیْنَا بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِیْنِ ﴿۳۰﴾ ع ۲۹ ۱۴

मोहलत न दी गई[29] और बेशक हम ने बनी इसराईल को ज़िल्लत के अ़ज़ाब से नजात बख़्शी[30]

مِنْ فِرْعَوْنَ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَالِیًا مِّنَ الْمُسْرِفِیْنَ ﴿۳۱﴾ وَ لَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ عَلٰی

फ़िरऔ़न से बेशक वोह मुतकब्बिर ह़द से बढ़ने वालों में से था और बेशक हम ने उन्हें[31]

عِلْمٍ عَلَی الْعٰلَمِیْنَ ﴿۳۲﴾ وَ اٰتَیْنٰهُمْ مِّنَ الْاٰیٰتِ مَا فِیْهِ بَلٰٓؤٌا مُّبِیْنٌ ﴿۳۳﴾ اِنَّ

दानिस्ता चुन लिया उस ज़माने वालों से और हम ने उन्हें वोह निशानियां अ़ता फ़रमाईं जिन में सरीह़ इन्आ़म था[32] बेशक

هٰۤؤُلَآءِ لَیَقُوْلُوْنَ ﴿۳۴﴾ اِنْ هِیَ اِلَّا مَوْتَتُنَا الْاُوْلٰی وَ مَا نَحْنُ بِمُنْشَرِیْنَ ﴿۳۵﴾

येह[33] कहते हैं वोह तो नहीं मगर हमारा एक दफ़्आ़ का मरना[34] और हम उठाए न जाएंगे[35]

فَاْتُوْا بِاٰبَآىِٕنَاۤ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۳۶﴾ اَهُمْ خَیْرٌ اَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ ۙ وَّ الَّذِیْنَ

तो हमारे बाप दादा को ले आओ अगर तुम सच्चे हो[36] क्या वोह बेहतर हैं[37] या तुब्बअ़ की क़ौम[38] और जो

مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ اَهْلَكْنٰهُمْ ۫ اِنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِیْنَ ﴿۳۷﴾ وَ مَا خَلَقْنَا

उन से पहले थे[39] हम ने उन्हें हलाक कर दिया[40] बेशक वोह मुजरिम लोग थे[41] और हम ने न बनाए

27 : या'नी बनी इसराईल को जो न उन के हम मज़हब थे न रिश्तेदार न दोस्त। 28 : क्यूं कि वोह ईमानदार न थे और ईमानदार जब मरता है तो उस पर आस्मान व ज़मीन चालीस रोज़ तक रोते हैं जैसा कि तिरमिज़ी की ह़दीस में है, मुजाहिद से कहा गया कि क्या मोमिन की मौत पर आस्मान व ज़मीन रोते हैं ? फ़रमाया : ज़मीन क्यूं न रोए उस बन्दे पर जो ज़मीन को अपने रुकूअ़ व सुजूद से आबाद रखता था और आस्मान क्यूं न रोए उस बन्दे पर जिस की तस्बीह़ व तक्बीर आस्मान में पहुंचती थी। ह़सन का क़ौल है कि मोमिन की मौत पर आस्मान वाले और ज़मीन वाले रोते हैं। 29 : तौबा वग़ैरा के लिये अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार करने के बा'द। 30 : या'नी ग़ुलामी और शाक़्क़ा ख़िदमतों और मेह़नतों से और औलाद के क़त्ल किये जाने से जो उन्हें पहुंचता था 31 : या'नी बनी इसराईल को 32 : कि उन के लिये दरिया में ख़ुश्क रस्ते बनाए, अब्र को साएबान किया, मन्न व सल्वा उतारा, इस के इ़लावा और ने'मतें दीं। 33 : कुफ़्फ़ारे मक्का 34 : या'नी इस ज़िन्दगानी के बा'द सिवाए एक मौत के हमारे लिये और कोई ह़ाल बाक़ी नहीं, इस से उन का मक़्सूद बअ़्स या'नी मौत के बा'द ज़िन्दा किये जाने का इन्कार करना था जिस को अगले जुम्ले में वाज़ेह़ कर दिया। (کبیر) 35 : बा'दे मौत ज़िन्दा कर के। 36 : इस बात में कि हम बा'द मरने के ज़िन्दा कर के उठाए जाएंगे। कुफ़्फ़ारे मक्का ने येह सुवाल किया था कि क़ुसय बिन किलाब को ज़िन्दा कर दो अगर मौत के बा'द किसी का ज़िन्दा होना मुम्किन हो और येह उन की जाहिलाना बात थी क्यूं कि जिस काम के लिये वक़्त मुअ़य्यन हो उस का उस वक़्त से क़ब्ल वुजूद में न आना उस के ना मुम्किन होने की दलील नहीं होता और न उस का इन्कार सह़ीह़ होता है, अगर कोई शख़्स किसी नए जमे हुए दरख़्त या पौदे को कहे कि इस में से अब फल निकालो वरना हम नहीं मानेंगे कि इस दरख़्त से फल निकल सकता है तो उस को जाहिल क़रार दिया जाएगा और उस का इन्कार मह़्ज़ ह़ुमुक़ (बे वुक़ूफ़ी) या मुकाबरह होगा। 37 : या'नी कुफ़्फ़ारे मक्का ज़ोर व क़ुव्वत में 38 : तुब्बए़ ह़िम्यरी बादशाहे यमन साह़िबे ईमान थे और उन की क़ौम काफ़िर थी जो निहायत क़वी ज़ोरआवर और कसीरुत्ता'दाद थी। 39 : काफ़िर उम्मतों में से 40 : उन के कुफ़्र के बाइ़स। 41 : काफ़िर मुन्किरे बअ़्स।

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿۳۸﴾ مَا خَلَقْنٰهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ

आस्मान और ज़मीन और जो कुछ उन के दरमियान है खेल के तौर पर[42] हम ने उन्हें न बनाया मगर हक़ के साथ[43]

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۹﴾ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيْقَاتُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۴۰﴾

लेकिन उन में अक्सर जानते नहीं[44] बेशक फ़ैसले का दिन[45] उन सब की मीआ़द है

يَوْمَ لَا يُغْنِيْ مَوْلًى عَنْ مَّوْلًى شَيْـًٔا وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿۴۱﴾ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ

जिस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त के कुछ काम न आएगा[46] और न उन की मदद होगी[47] मगर जिस पर अल्लाह

اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿۴۲﴾ اِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوْمِ ﴿۴۳﴾ طَعَامُ

रह़्म करे[48] बेशक वोही इ़ज़्ज़त वाला मेहरबान है बेशक थोहड़ का पेड़[49] गुनहगारों

الْاَثِيْمِ ﴿۴۴﴾ كَالْمُهْلِ ۚ يَغْلِيْ فِي الْبُطُوْنِ ﴿۴۵﴾ كَغَلْيِ الْحَمِيْمِ ﴿۴۶﴾ خُذُوْهُ

की ख़ूराक है[50] गले हुए तांबे की त़रह़ पेटों में जोश मारे जैसा खौलता पानी जोश मारे[51] उसे पकड़ो[52]

فَاعْتِلُوْهُ اِلٰى سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ﴿۴۷﴾ ثُمَّ صُبُّوْا فَوْقَ رَاْسِهٖ مِنْ عَذَابِ

ठीक भड़कती आग की त़रफ़ ब ज़ोर घसीटते ले जाओ फिर उस के सर के ऊपर खौलते पानी का

الْحَمِيْمِ ﴿۴۸﴾ ذُقْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْكَرِيْمُ ﴿۴۹﴾ اِنَّ هٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهٖ

अ़ज़ाब डालो[53] चख[54] हां हां तू ही बड़ा इ़ज़्ज़त वाला करम वाला है[55] बेशक येह है वोह[56] जिस में तुम

تَمْتَرُوْنَ ﴿۵۰﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ مَقَامٍ اَمِيْنٍ ﴿۵۱﴾ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿۵۲﴾

शुबा करते थे[57] बेशक डर वाले अमान की जगह में हैं[58] बाग़ों और चश्मों में

ركوع ١٥ · معانقة ١٢

42 : अगर मरने के बा'द उठना और ह़िसाब व सवाब न हो तो ख़ल्क़ की पैदाइश मह़ज़ फ़ना के लिये होगी और येह अ़बस व लअ़ब है, तो इस दलील से साबित हुवा कि इस दुन्यवी ज़िन्दगी के बा'द उख़्रवी ज़िन्दगी ज़रूर है जिस में ह़िसाब व जज़ा हो। **43 :** कि त़ाअ़त पर सवाब दें और मा'सियत पर अ़ज़ाब करें। **44 :** कि पैदा करने की ह़िक्मत येह है और ह़कीम का फ़े'ल अ़बस नहीं होता। **45 :** या'नी रोज़े क़ियामत जिस में अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने बन्दों में फ़ैसला फ़रमाएगा। **46 :** और क़राबत व मह़ब्बत नफ़्अ़ न देगी। **47 :** या'नी काफ़िरों की। **48 :** या'नी सिवाए मोमिनीन के कि वोह ब इज़्ने इलाही एक दूसरे की शफ़ाअ़त करेंगे। (جمل) **49 :** थोहड़ एक ख़बीस निहायत कड़वा दरख़्त है जो अहले जहन्नम की ख़ूराक होगा। ह़दीस शरीफ़ में है कि अगर एक क़त़रा उस थोहड़ का दुन्या में टपका दिया जाए तो अहले दुन्या की ज़िन्दगानी ख़राब हो जाए। **50 :** अबू जह्ल की और उस के साथियों की जो बड़े गुनहगार हैं। **51 :** जहन्नम के फ़िरिश्तों को हुक्म दिया जाएगा कि **52 :** या'नी गुनहगार को **53 :** और उस वक़्त दोज़ख़ी से कहा जाएगा कि **54 :** इस अ़ज़ाब को। **55 :** मलाएका येह कलिमा इहानत और तज़्लील के लिये कहेंगे क्यूं कि अबू जह्ल कहा करता था कि ''बत़्ह़ा'' में मैं बड़ा इ़ज़्ज़त वाला करम वाला हूं, उस को अ़ज़ाब के वक़्त येह त़ा'ना दिया जाएगा और कुफ़्फ़ार से येह भी कहा जाएगा कि **56 :** अ़ज़ाब जो तुम देखते हो। **57 :** और उस पर ईमान नहीं लाते थे। इस के बा'द परहेज़ गारों का ज़िक्र फ़रमाया जाता है। **58 :** जहां कोई ख़ौफ़ नहीं।

www.dawateislami.net

يَّلْبَسُوْنَ مِنْ سُنْدُسٍ وَّ اِسْتَبْرَقٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ٥٣ كَذٰلِكَ وَزَوَّجْنٰهُمْ

पहनेंगे करेब और क़नादीज़[59] आमने सामने[60] यूंही है और हम ने उन्हें बियाह दिया

بِحُوْرٍ عِيْنٍ ٥٤ يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِيْنَ ٥٥ لَا يَذُوْقُوْنَ

निहायत सियाह और रोशन बड़ी आंखों वालियों से उस में हर क़िस्म का मेवा मांगेंगे[61] अम्न व अमान से[62] उस में पहली

فِيْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰى ۚ وَوَقٰىهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ٥٦ فَضْلًا

मौत के सिवा[63] फिर मौत न चखेंगे और अल्लाह ने उन्हें आग के अ़ज़ाब से बचा लिया[64] तुम्हारे

مِّنْ رَّبِّكَ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ٥٧ فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ

रब के फ़ज़्ल से येही बड़ी काम्याबी है तो हम ने इस कुरआन को तुम्हारी ज़बान में[65] आसान किया कि

يَتَذَكَّرُوْنَ ٥٨ فَارْتَقِبْ اِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُوْنَ ٥٩ ع ٣

वोह समझें[66] तो तुम इन्तिज़ार करो[67] वोह भी किसी इन्तिज़ार में हैं[68]

اٰياتها ٣٧ | ٤٥ سُوْرَةُ الْجَاثِيَةِ مَكِّيَّةٌ ٦٥ | ركوعاتها ٤

सूरए जासियह मक्किय्या है, इस में सैंतीस आयतें और चार रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

حٰمٓ ١ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ٢ اِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ

किताब का उतारना है अल्लाह इ़ज़्ज़त व हि़क्मत वाले की त़रफ़ से बेशक आस्मानों

وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ٣ وَفِيْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ

और ज़मीन में निशानियां हैं ईमान वालों के लिये[2] और तुम्हारी पैदाइश में[3] और जो जो जानवर वोह फैलाता है

59 : या'नी रेशम के बारीक व दबीज़ लिबास। 60 : कि किसी की पुश्त किसी की त़रफ़ न हो। 61 : या'नी जन्नत में अपने जन्नती ख़ादिमों को मेवे ह़ाज़िर करने का हुक्म देंगे 62 : कि किसी क़िस्म का अन्देशा ही न होगा न मेवे के कम होने का न ख़त्म हो जाने का न ज़रर करने का न और कोई। 63 : जो दुन्या में हो चुकी 64 : उस से नजात अ़त़ा फ़रमाई। 65 : या'नी अ़रबी में 66 : और नसीह़त क़बूल करें और ईमान लाएं, लेकिन लाएंगे नहीं। 67 : उन के हलाक व अ़ज़ाब का। 68 : तुम्हारी मौत के। (قِيلَ هٰذِهِ الْاٰيَةُ مَنْسُوْخَةٌ بِاٰيَةِ السَّيْفِ) 1 : येह सूरए जासियह है, इस का नाम सूरए शरीअ़ह भी है, येह सूरत मक्किय्या है सिवाए आयत "قُلْ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَغْفِرُوْا" के। इस सूरत में चार रुकूअ़, सैंतीस आयतें, चार सो अठासी कलिमे, दो हज़ार एक सो इक्यानवे ह़र्फ़ हैं। 2 : अल्लाह तआ़ला की कुदरत और उस की वह़दानिय्यत पर दलालत करने वाली। 3 : या'नी तुम्हारी पैदाइश में भी उस की कुदरत व हि़क्मत की निशानियां हैं कि नुत़्फ़े को ख़ून बनाता है, ख़ून को बस्ता (जम्अ़ हुवा) करता है, ख़ूने बस्ता को गोश्त पारा (गोश्त का टुकड़ा) यहां तक कि पूरा इन्सान बना देता है।

www.dawateislami.net